
पावेल बाझोव
चमत्कारी
बकरा

पावेल बाझोव

चमत्कारी बकरा

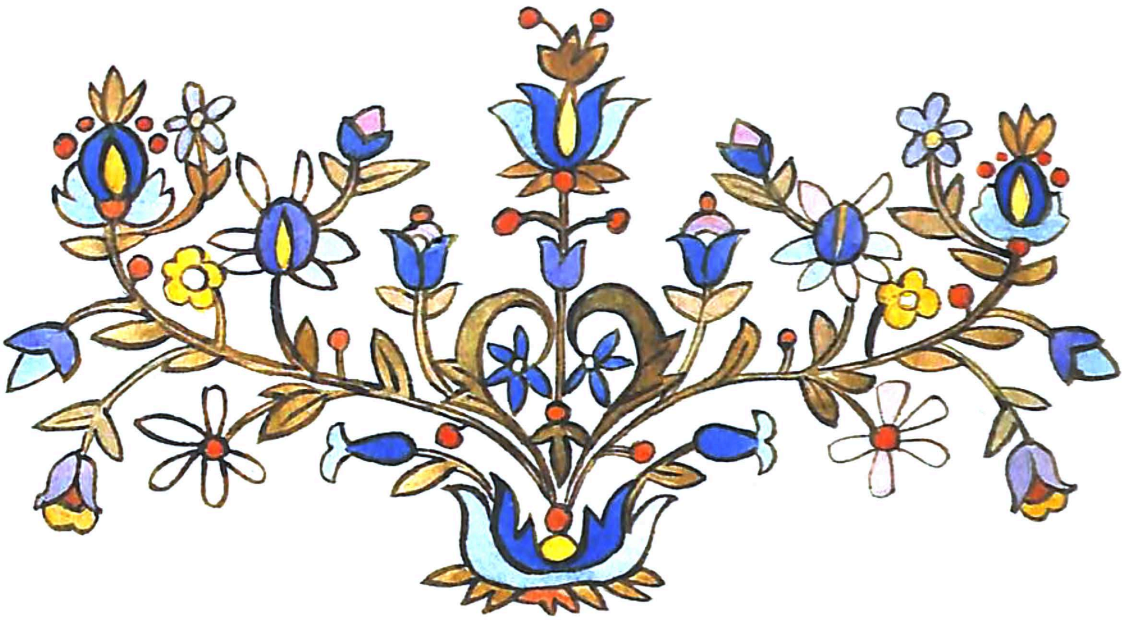
अनुवाद: संगमलाल मालवीय
डिज़ाइन: अलेक्सांद्र प्लाक्सीन

रादुगा प्रकाशन · मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर-30200।





खनिकों की बस्ती में एक बूढ़ा रहता था, जिसे लोग कोकोवान्या कहते थे। कोकोवान्या के परिवार में कोई बचा न था, इसलिए उसने किसी अनाथ बच्चे को गोद लेने का निश्चय किया। उसने पड़ोसियों से पूछा कि शायद उन्हें कुछ पता हो। उन्होंने बताया:

"हाल ही में ग्रिगोरी पोतोपायेव का परिवार बेसहारा हो गया है। बड़ी लड़कियों को तो चोबदार ने सिलाई-बिनाई के काम में लगा दिया है, लेकिन छह वर्ष की एक बच्ची रह गयी है, जिसकी किसी को ज़रूरत नहीं है। उसका नाम दार्योन्का है। उसी को तुम अपना लो।"

"लड़की जात के साथ तो मुश्किल होगा। लड़का बेहतर होता। उसे अपना काम सिखा देता, एक मददगार हो जाता। बच्ची को गोद लेकर क्या करूंगा? मैं क्या सिखाऊंगा उसे?"

फिर सोचकर उसने कहा :

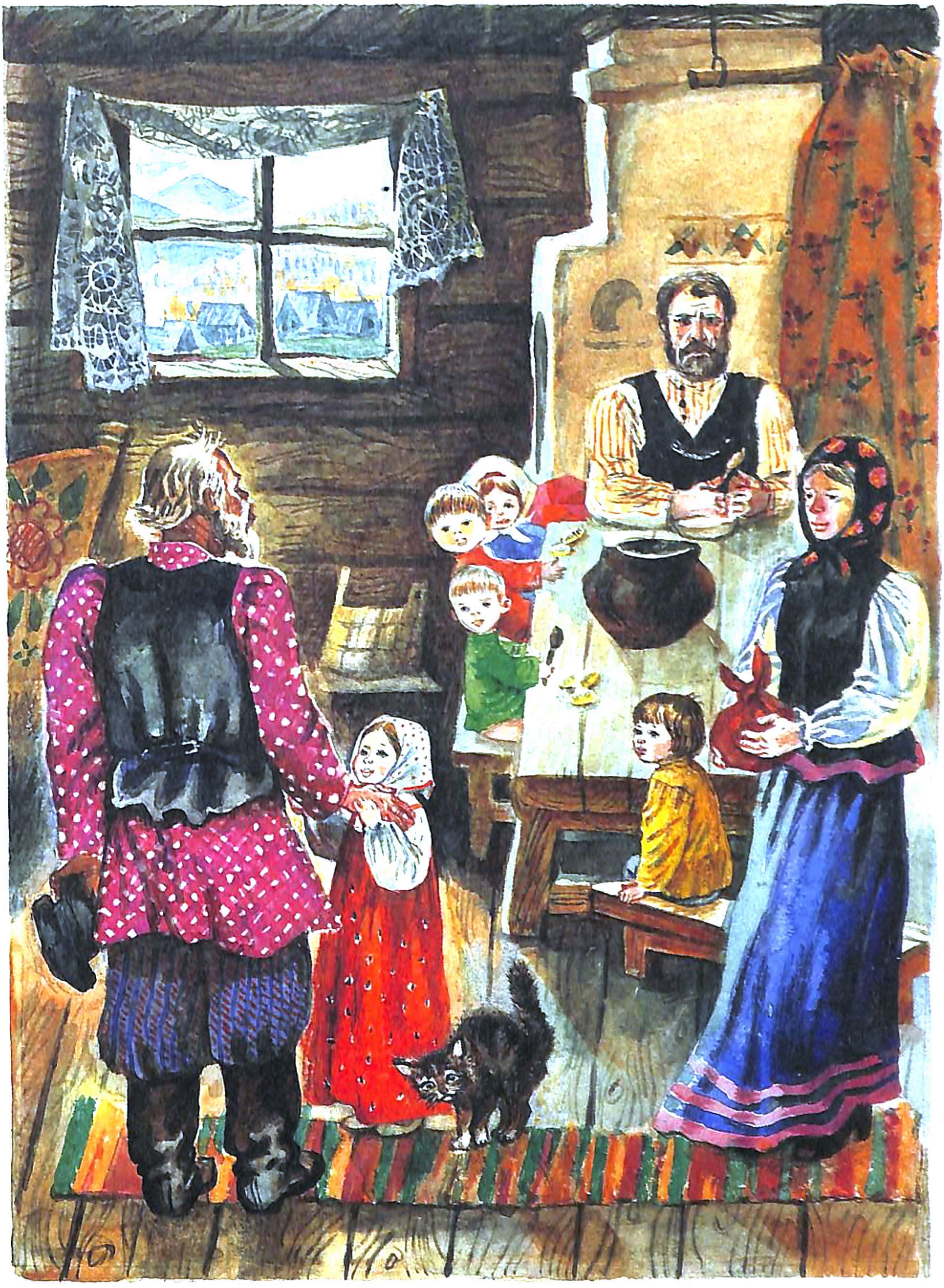
"ग्रिगोरी को तो मैं जानता था, उसकी पत्नी को भी। दोनों ही चुस्त और खुशमिज़ाज थे। यदि बच्ची मां-बाप पर गयी है, तो अपनी झोंपड़ी सूनी नहीं रहेगी। चलो, उसे गोद ले लेता हूं। लेकिन वह राज़ी भी होगी?"

पड़ोसियों ने समझाकर बताया :

"उसके दिन बुरे कट रहे हैं। चोबदार ने ग्रिगोरी की झोंपड़ी किसी दुख के मारे को दे दी है और बदले में अनाथ लड़की का भरण-पोषण करने के लिये कहा है। लेकिन उसके अपने परिवार में ही दस से ज़्यादा लोग हैं। खुद ही उन्हें पेट भर खाना नहीं मिलता था। घरवाली बस कुढ़ती रहती है। बच्ची को रोटी के एक-एक टुकड़े के लिए तरसाती है, ताने मारती है। बच्ची छोटी है, फिर भी सब समझती है। दुखी रहती है। ऐसे जीवन से ज़रूर छुटकारा चाहेगी! फिर तुम भी मना लेना, मान जायेगी।"

"यह भी सही है," कोकोवान्या ने उत्तर दिया, "मना ही लूंगा किसी तरह।"

छुट्टी के दिन वह उनके घर आया, जिनके परिवार में लड़की पल रही थी। देखा कि झोंपड़ी ठसाठस भरी हुई है छोटे-बड़ों से। अलावघर की सीढ़ी पर एक बच्ची बैठी थी और उसके साथ हल्के कत्थई रंग की एक बिल्ली थी। बच्ची नन्ही-सी थी, बिल्ली भी नन्ही-सी। मरियल और खौरही इतनी थी कि शायद ही कोई उसे अपनी झोंपड़ी में घुसने दे। बच्ची इस बिल्ली को सहला रही थी और वह इतने खनकीले स्वर में मुर्र-मुर्र कर रही थी कि पूरी झोंपड़ी में सुनाई दे रहा था।



कोकोवान्या ने बच्ची को ध्यान से देखा और पूछा:

"ग्रिगोरी की बच्ची दार्योन्का यही है क्या?"

"हां, यही है। खुद तो आई ही, एक खौरही बिल्ली भी ले आई है। भागती ही नहीं है। मेरे सभी बच्चों को नोच-खसोट चुकी है, उस पर उसे खिलाओ भी!"

कोकोवान्या ने कहा:

"लगता है, तुम्हारे बच्चे उसे स्नेह नहीं करते। देखो न, उसके पास बैठी प्यार से मुर्र-मुर्र कर रही है।"

"दादा जी, आप कौन हैं?" लड़की ने पूछा।

"मैं," कोकोवान्या ने कहा, "एक तरह से शिकारी हूं। गर्मियों में खान क़ी रेत धोता हूं, सोने के कण खोजता हूं। जाड़े में जंगली बकरे के पीछे भागता रहता हूं, पर दिखता ही नहीं है।"

"क्या आप उसका शिकार करेंगे?"

"नहीं," कोकोवान्या ने उत्तर दिया। "मैं तो साधारण जंगली बकरों का शिकार करता हूं, लेकिन उस बकरे का नहीं। मैं देखना चाहता हूं कि वह अपने अगले दायें खुर से किस जगह प्रहार करता है।"

"लेकिन आप ऐसा क्यों चाहते हैं, दादा जी?"

"मेरे घर रहने चलोगी, तभी सब कुछ बताऊंगा," कोकोवान्या ने उत्तर दिया।

लड़क़ी उस बकरे के बारे में जानने के लिए उत्सुक हो उठी। देख रही थी कि बूढ़ा खुशमिज़ाज और स्नेही है। वह बोली:

"चलूंगी। लेकिन आप इस बिल्ली मुर्योन्का को भी साथ ले चलियेगा। देखिये न, यह कितनी अच्छी है।"



"इसके बारे में तो," कोकोवानया ने कहा, "कुछ कहना ही नहीं है। इतनी खनकती बिल्ली को न ले चलना तो बेवकूफ़ी ही होगी। यह हमारी झोंपड़ी में बाजे का काम करेगी।"

घरवाली उनकी बातें गौर से सुन रही थी। वह बड़ी खुश थी कि कोकोवान्या लड़की को अपने साथ ले जाना चाहता है। वह जल्दी-जलदी दार्योन्का की चीज़ें इकट्ठी करने लगी। डर रही थी कि कहीं बूढ़ा अपना इरादा न बदल दे।

बिल्ली भी जैसे सारी बात समझ रही थी। वह लड़की के पैरों से पीठ रगड़-रगड़ कर मुर्र-मुर्र करती जा रही थी:

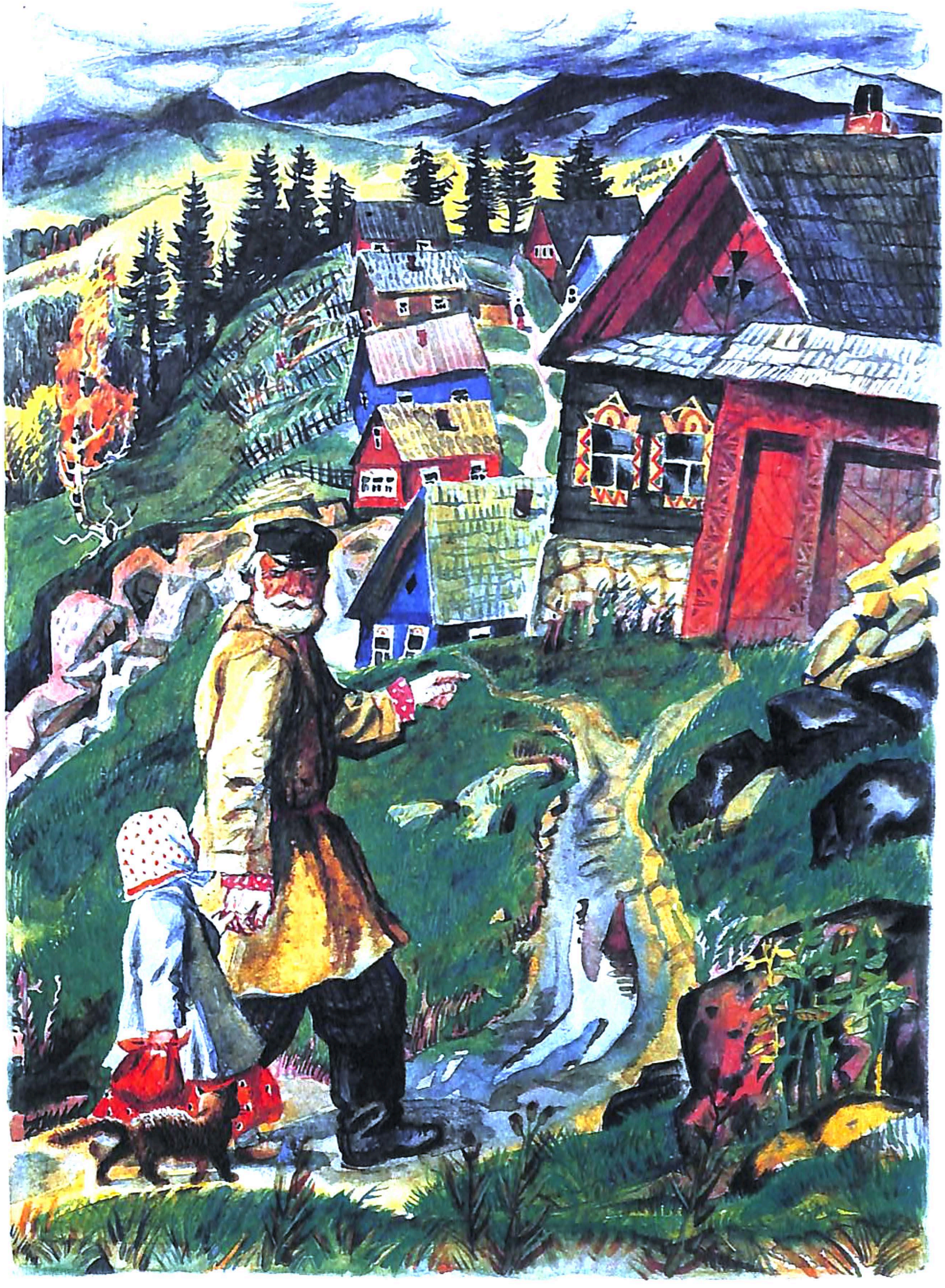
"म्याऊं-म्याऊं... ठीक है, ठीक।"

बस, बूढ़ा लड़की को अपने घर ले चला।



खुद डीलडौलवाला, दढ़ियल था और वह नन्ही-सी थी, नाक चिपकी हुई, चुटपुटिया बटन जैसी। दोनों सड़क पर चले जा रहे थे, पीछे-पीछे खौरही बिल्ली फुदकती चल रही थी।

इस तरह बूढ़ा कोकोवान्या, लड़की दार्योन्का और बिल्ली मुर्योन्का साथ-साथ रहने लगे। जीते थे, धन नहीं जोड़ पाते थे, लेकिन आंसू



भी नहीं बहाते थे। अपने-अपने काम में मगन रहते थे।

कोकोवान्या सुबह-सुबह काम पर चला जाता था। दार्योन्का झोंपड़ी झाड़ती-बुहारती थी, सूप और दलिया पकाती थी। बिल्ली मुर्योन्का शिकार करने जाती थी, चूहे पकड़ती थी। शाम को सब इकट्ठे होते थे, हंसते-खिलखिलाते थे।

बूढ़ा कहानियां सुनाने में उस्ताद था, दार्योन्का बड़े चाव से कहानियां सुनती थी और बिल्ली मुर्योन्का पड़ी-पड़ी मुर्र-मुर्र करती रहती थी:

"म्याऊं... म्याऊं... ठीक है, ठीक।"

लेकिन हर कहानी के बाद दार्योन्का यह कहना न भूलती थी:

"दादा जी, उस बकरे के बारे में बताओ न। कैसा है वह?"

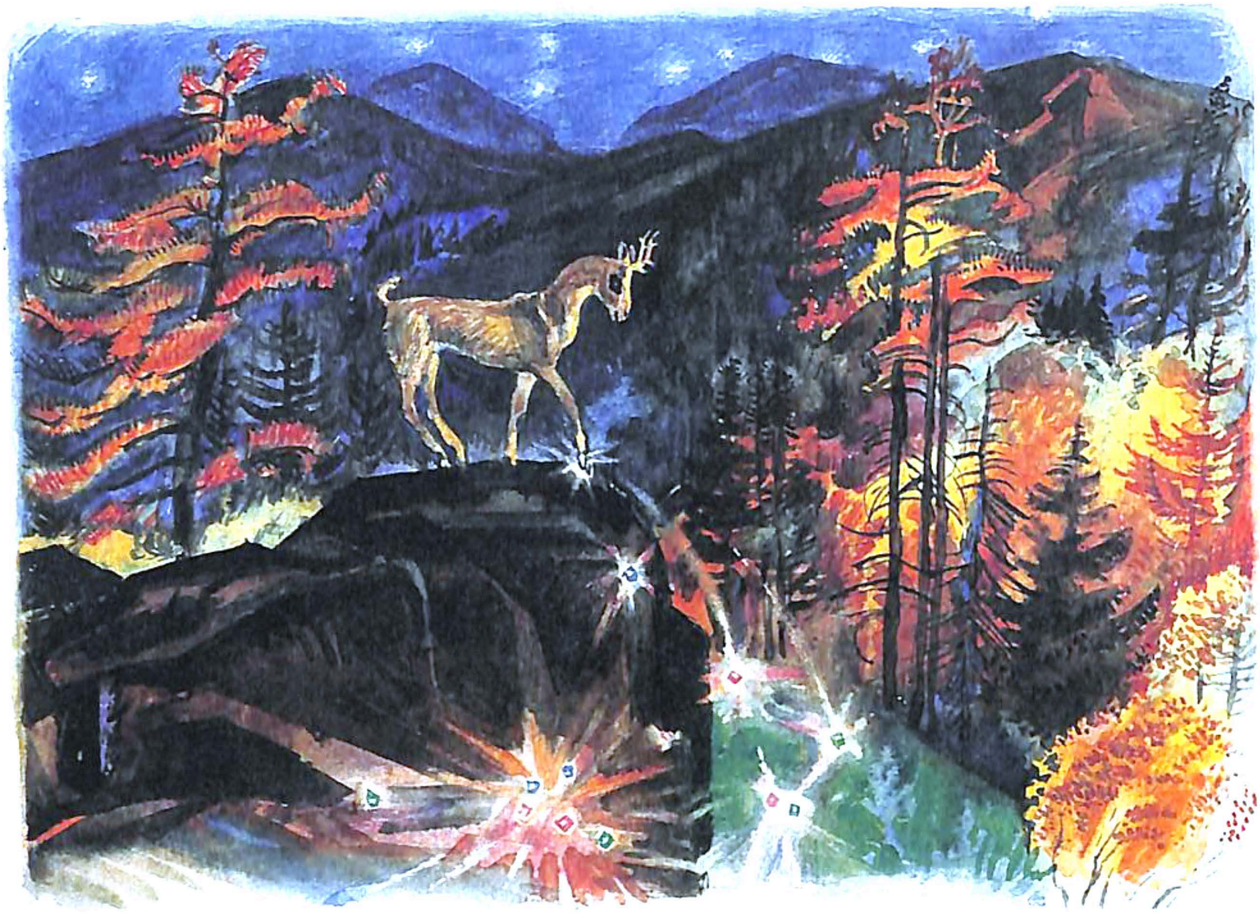
कोकोवान्या पहले तो मना करता रहा, फिर एक दिन बोला:

"वह एक खास तरह का चमत्कारी बकरा है। उसके अगले दायें पैर का खुर चांदी का है। और जिस जगह पर वह इस खुर से प्रहार करता है, वहां रत्न पैदा हो जाते हैं। एक बार चोट करता है तो एक रत्न, दो बार—तो दो रत्न और जहां लगातार चोट करने लगता है, वहां तो बस रत्नों का ढेर लग जाता है।"

बूढ़ा बताने को तो सब बता गया, लेकिन लेने के देने पड़ गए। उस दिन से दार्योन्का की ज़बान पर बस एक ही बात रहती थी—सिर्फ़ उस बकरे के बारे में:

"दादा जी, क्या वह खूब बड़ा है?"





कोकोवान्या ने उसे बताया कि बकरा मेज़ से ऊंचा नहीं है, उसकी टांगें पतली-पतली हैं; सिर हल्का-फुल्का है।

दार्योन्का फिर पूछने लगती थी:

"दादा जी, उसके सींग हैं?"

"सींग," बूढ़ा बताता था," उसके बेजोड़ हैं। साधारण बकरों के दो सींग होते हैं और उसके—पांच। वह पंचसींगा है।"

"दादा जी, और वह खाता किसको है?"

"किसी को नहीं," बूढ़ा जवाब देता था। "वह घास और पत्तियां

खाता है। जाड़ों में पुआल के ढेर में से भी कुछ खा लिया करता है।"

"दादा जी, उसके रोएं कैसे होते हैं?"

"गर्मियों में हमारी मुर्योन्का की तरह हल्के कत्थई रंग के और जाड़ों में भूरे," बूढ़े ने उत्तर दिया।

"दादा जी, वह बदबू भी करता है?"

कोकोवान्या को गुस्सा आ गया:

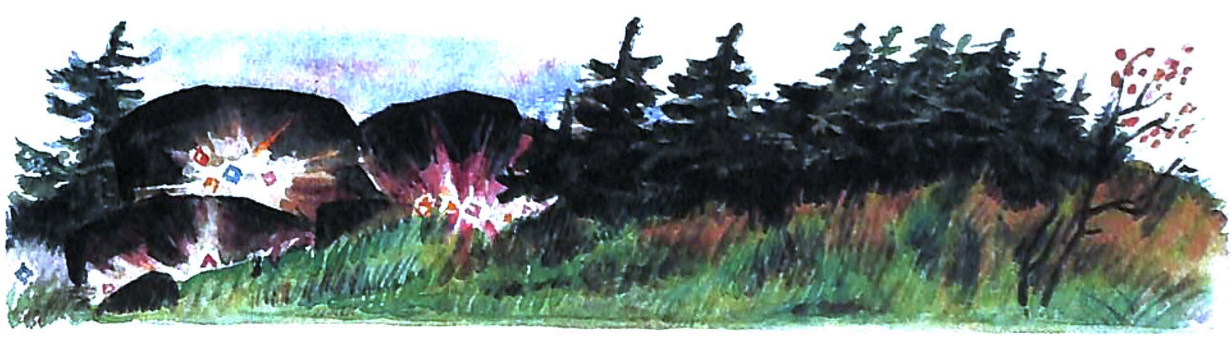
"बदबू काहे की। ये तो पालतू बकरे ऐसे होते हैं और जंगली बकरा जंगल की खुशबू बिखेरता है।"

पतझड़ आते ही कोकोवान्या जंगल जाने की तैयारी करने लगा। उसे देखना था कि किस तरफ़ अधिक बकरे चरते हैं। दार्योन्का विनती करने लगी:

"मुझे भी साथ ले चलो, दादा जी। शायद दूर से ही मैं उस बकरे को देख लूं।"

कोकोवान्या उसे समझाने लगा:

"दूर से तो उसे देखना मुश्किल है। पतझड़ ऋतु में हर बकरे के सींग होते हैं। यह थोड़े ही पता चलेगा कि किसके कितने सींग हैं।



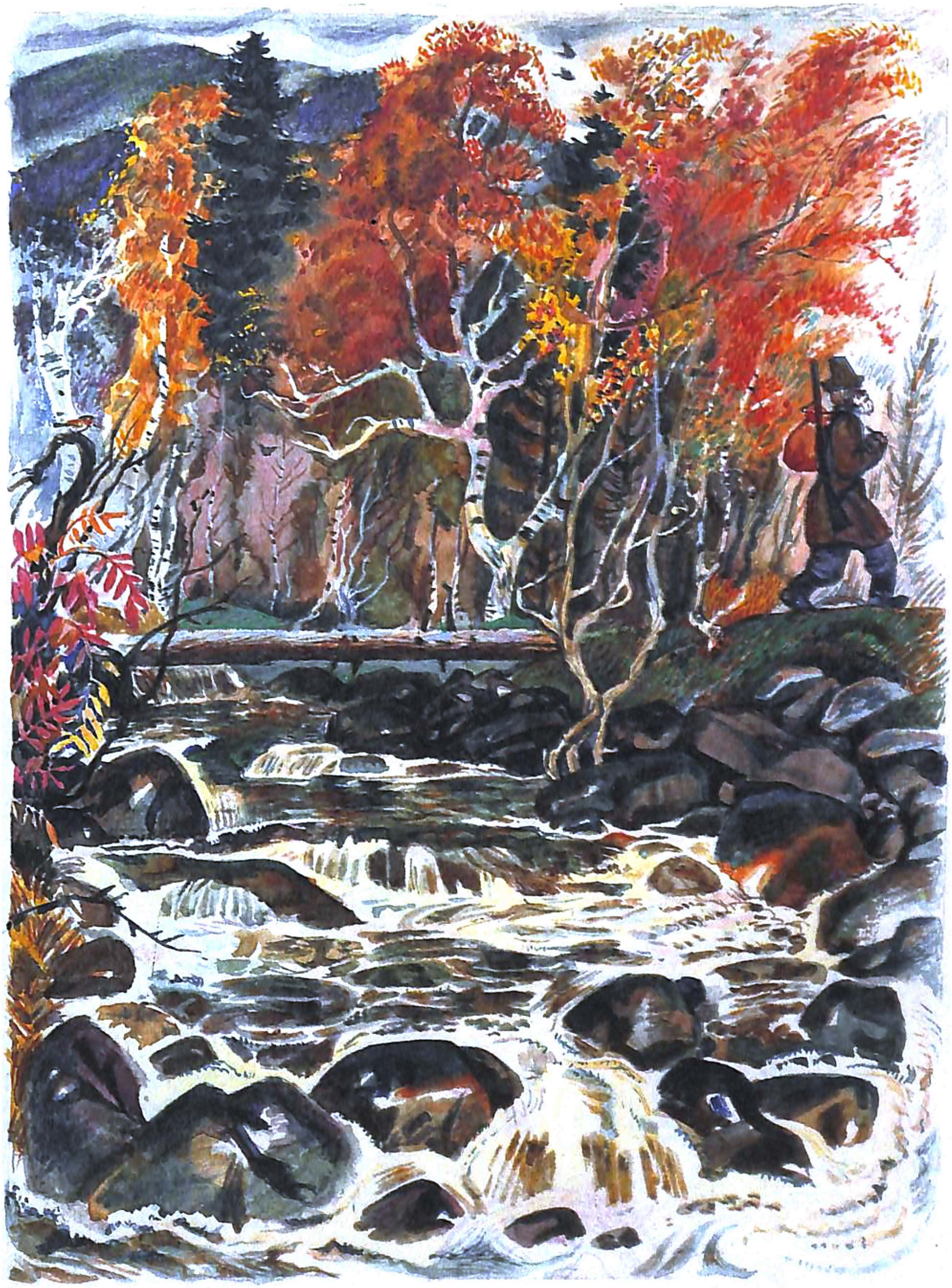
जाड़ों की बात दूसरी है। साधारण बकरों के सींग झड़ जाते हैं, लेकिन उस चमत्कारी बकरे के सींग कभी झड़ते ही नहीं, चाहे जाड़ा हो, चाहे गर्मी। तब उसे दूर से पहचाना जा सकता है।"

इस तरह उसने दार्योन्का को राज़ी कर लिया। वह घर में रह गयी और कोकोवान्या जंगल चला गया।

पांच दिन बाद कोकोवान्या घर लौटा और दार्योन्का को बताने लगा:

"इस बार पोल्दनेव्स्काया की ओर सैकड़ों बकरे चर रहे हैं। जाड़ों में उधर ही जाऊंगा।"





“लेकिन,” दार्योन्का ने पूछा, “बर्फ़ से ढके जंगल में तुम ठहरोगे कहां?”

“वहां ढलान पर, जहां घास काटते हैं, मैंने लकड़ी की एक कोठरी बना रखी है। उसमें नन्हा-सा अलावघर और खिड़की भी है। जगह आरामदेह है,” बूढ़े ने उत्तर दिया।

दार्योन्का ने फिर पूछा:

“और चमत्कारी बकरा भी वहीं चरता है क्या?”

“कौन जाने, वहीं चरता हो।”

दार्योन्का ने आव देखा न ताव गिड़गिड़ाना शुरू कर दिया:

“मुझे भी साथ ले चलो, दादा जी। मैं वहां कोठरी में बैठी रहूंगी। शायद चांदी के खुरवाला बकरा पास आ ही जाये, फिर तो मैं देख ही लूंगी उसे।”

बूढ़े ने पहले ही तो हाथ हिलाकर कहा:

“क्या कहती हो! ऐसा भी कहीं होता है कि जाड़ों में नन्ही-सी लड़की जंगल में घूमे। वहां तो स्की पर चलना पड़ता है और तुम्हें यह नहीं आता। वहां भुरभुरी बर्फ़ में धंस गयीं तो! तुम्हारे साथ वहां कैसे रहूंगा? ठंड में अकड़ गयीं तो!”

लेकिन दार्योन्का ने हार नहीं मानी:

“ले चलो न, दादा जी! स्की पर थोड़ा-बहुत चलना तो मुझे आता ही है।”

कोकोवान्या ना, ना करता रहा, फिर मन में सोचने लगा:

“ले जाऊं क्या? एक बार हो आये, दुबारा नहीं कहेगी।”

इसीलिये उसने कहा:

"खैर, ले चलूंगा। लेकिन बाद में रोना मत, और घर आने के लिये ज़िद न करना।"

जैसे ही जाड़ा आया, वे जंगल जाने की तैयारियां करने लगे। कोकोवान्या ने स्लेज गाड़ी पर दो बोरी सुखायी हुई रोटियां रख लीं, शिकार के लिये जो ज़रूरी चीज़ें थीं, उन्हें भी रख लिया। दार्योन्का ने भी अपनी गठरी बांध ली। उसमें गुड़िया का फ़्रॉक सीने के लिये



कपड़े की कतरनें, धागे की अंटी, सूई और एक रस्सी भी रख ली।

वह सोच रही थी: "इस रस्सी से चमत्कारी बकरे को पकड़ा नहीं जा सकता क्या?"

उसे अपनी बिल्ली को छोड़कर जाने में दुख हो रहा था, पर कोई चारा न था। विदा के वक्त उसे सहलाती हुई वह कह रही थी:

"मुर्योन्का, दादा जी के साथ मैं जंगल जा रही हूं, तुम घर में रहना और चूहे पकड़ना। जैसे ही चमत्कारी बकरा देख लूंगी, घर लौट आऊंगी। फिर मैं तुम्हें सारा किस्सा सुनाऊंगी।"

बिल्ली चतुराई से देख रही थी और मुर्र-मुर्र करती जा रही थी:

"म्याऊं... म्याऊं... ठीक है, ठीक।"

कोकोवान्या और दार्योन्का चल पड़े जंगल की ओर। पड़ोसियों को आश्चर्य हो रहा था:

"बूढ़ा सठिया तो नहीं गया है? इतनी छोटी बिटिया को जाड़े में अपने साथ जंगल ले जा रहा है।"

जब कोकोवान्या और दार्योन्का बस्ती से निकलने लगे, तो लगा कि कुत्तों का कोहराम मचा हुआ है। ऐसे भूंक रहे थे, जैसे सड़क पर कोई अनोखा जानवर चला जा रहा हो। उन्होंने मुड़कर देखा कि मुर्योन्का बीच सड़क पर भागी चली आ रही थी। उस समय तक वह खासी मोटी-तगड़ी हो चुकी थी। कुत्ते उसके पास फटकने का साहस भी नहीं कर पा रहे थे।

दार्योन्का बिल्ली को पकड़कर घर ले जाना चाहती थी, लेकिन यह





उसके वश की बात न थी। मुर्योन्का दौड़कर जंगल तक पहुंची और एक चीड़ वृक्ष पर चढ़ गयी। अब पकड़ो, कैसे पकड़ते हो उसे।

दार्योन्का पुकारती रही, लेकिन बिल्ली को बुला नहीं पायी। क्या किया जाये? आगे चल दिये। उन्होंने देखा कि मुर्योन्का बगल-बगल भागती जा रही है। देखते ही देखते वह जंगल में बनी उस कोठरी तक पहुंच गयी।

इस तरह कोठरी में तीनों रहने लगे। दार्योन्का प्रशंसा करने लगी:

"चलो, अब मज़े से रहेंगे!"

कोकोवान्या भी सहमत हो गया:



"हां, मज़े से रहेंगे ही।"

बिल्ली मुर्योन्का अलाव के पास गेंद की तरह गोल-मटोल होकर बैठ गयी और मुर्र-मुर्र करने लगी:

"म्याऊं... म्याऊं... ठीक है, ठीक।"

इस जाड़े में बकरों की बहुतायत थी। लेकिन ये साधारण बकरे थे। कोकोवान्या हर दिन एक या दो बकरों का शिकार करता था और उन्हें अपनी कोठरी तक घसीट लाता था। इस तरह ढेर सारी खाल जमा हो गयी, बकरे का मांस नमक लगाकर रख दिया गया था, ताकि खराब न हो। यह इतना ज़्यादा हो गया था कि घोड़े के बिना स्लेज गाड़ी पर ढोया नहीं जा सकता था। घोड़े लाने के लिये बस्ती तक जाना था,

लेकिन दार्योन्का और बिल्ली को जंगल में कैसे छोड़ा जाये? पर दार्योन्का अब जंगल की अभ्यस्त हो गयी थी। उसने बूढ़े से खुद कहा :

"दादा जी, घोड़े लाने के लिये बस्ती चले जाओ न। मांस घर ले जाना चाहिये।"

कोकोवान्या हैरान हुआ :

"तुम कितनी समझदार हो, दार्योन्का। बिल्कुल बड़ों की तरह बात करती हैं। लेकिन अकेले तो डर लगेगा।"

"डर किसका, दादा जी?" दार्योन्का ने कहा। "कोठरी हमारी मज़बूत है, भेड़िये इसमें घुस नहीं सकते। और मुर्योन्का भी साथ है। मैं डरूंगी नहीं। लेकिन तुम जल्दी लौट आओ!"

कोकोवान्या चला गया। दार्योन्का अपनी मुर्योन्का के साथ रह गयी। दिन में तो वह कोकोवान्या के बिना पहले भी रह लेती थी, पर जैसे ही अन्धेरा होने लगा, वह थोड़ा-थोड़ा डरने लगी। लेकिन जब देखा कि मुर्योन्का शान्त बैठी है, तो खुद भी प्रफुल्ल हो उठी। वह खिड़की के पास बैठकर ढलान की ओर देखने लगी, जहां गर्मियों में लोग घास काटा करते थे। देखा कि जंगल में कोई गोल-मटोल चीज़ ढुलकती फिर रही है। जब वह नज़दीक आयी, तो देखा कि यह बकरा था। उसकी टांगें पतली-पतली थीं, सिर हल्का-फुल्का था और हर सींग पर पांच शाखाएं फूटी हुई थीं।

दार्योन्का दौड़कर बाहर आयी, लेकिन वहां कुछ भी न था। लौटकर बोली :

"लगता है, मुझे नींद आ गयी थी। शायद मैंने सपना देखा था।"



मुर्योन्का ने मुर्र-मुर्र किया :

"म्याऊं... म्याऊं... ठीक है, ठीक।"

दार्योन्का बिल्ली के पास ही लेट गयी और सुबह तक सोती रही।

दूसरा दिन बीत गया। कोकोवान्या लौटा नहीं। दार्योन्का का मन कुछ उचट गया, लेकिन रोयी नहीं। मुर्योन्का को सहलाती हुई कहने लगी :

"उदास न हो, मुर्योन्का। कल तक दादा जी ज़रूर लौट आयेंगे।"

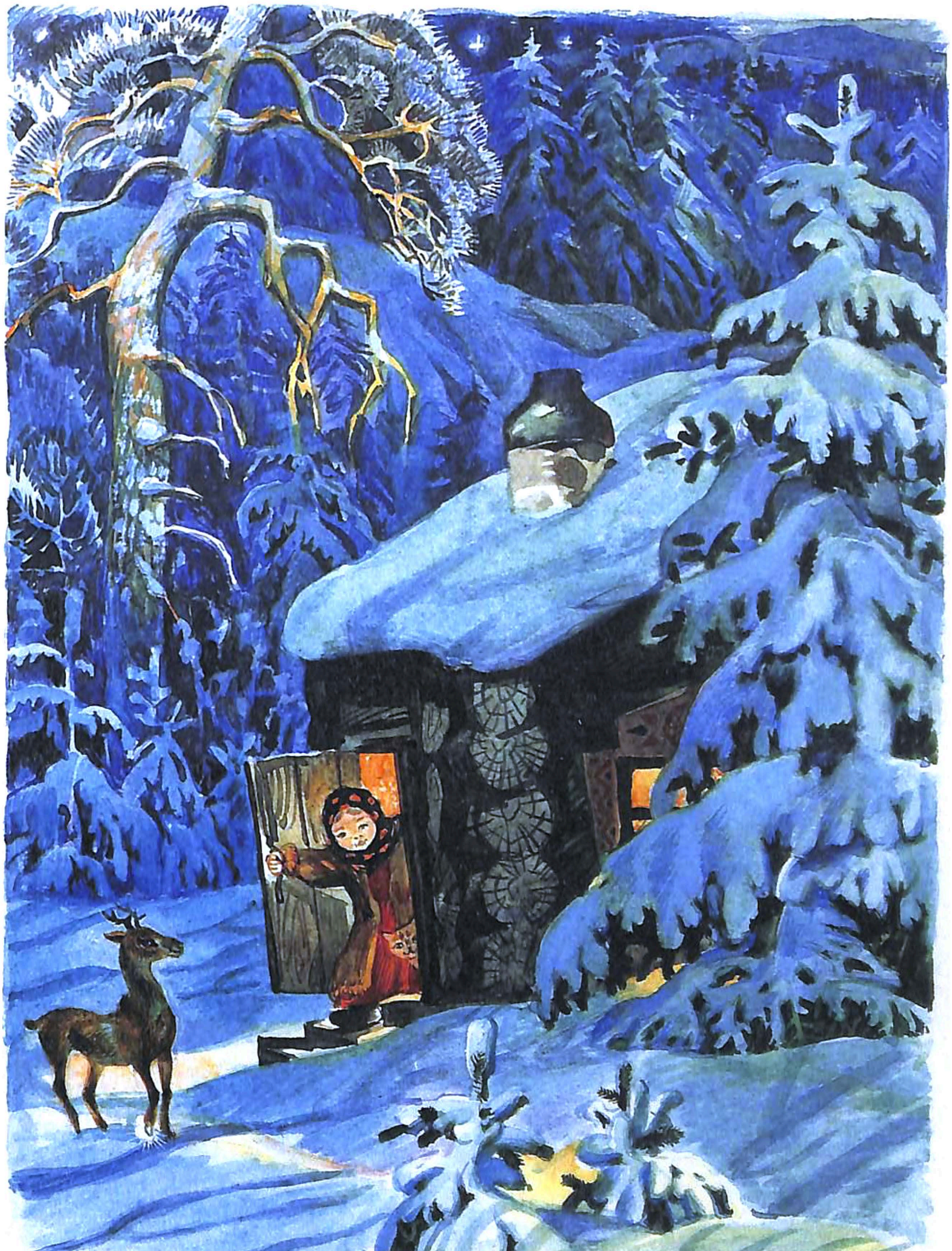
मुर्योन्का ने फिर अपनी तान छेड़ दी :

"म्याऊं... म्याऊं... ठीक है, ठीक।"

दार्योन्का फिर खिड़की के पास बैठ गयी और आकाश में तारे देखने लगी। वह सोना ही चाहती थी कि अचानक दीवार पर धमधमाहट सुनायी दी। दार्योन्का डर गयी, धमधमाहट अब दूसरी दीवार पर सुनायी देने लगी, फिर उस दीवार पर, जिसमें खिड़की थी, फिर जिसमें दरवाज़ा था। इसके बाद तो छप्पर पर धमधमाहट होने लगी। ज़्यादा ज़ोर से नहीं, सिर्फ़ लगता था कि कोई हल्के-हल्के, लेकिन तेज़ी से चल रहा है। दार्योन्का सोचने लगी :

"कहीं कलवाला बकरा तो नहीं आ गया है?"

और उसे देखने की इच्छा इतनी तीव्र हुई कि डर भी दुबक गया। उसने दरवाज़ा खोला, देखती है कि बकरा यहीं है, बिल्कुल पास में। उसने अगला दायां पैर उठाया, अब ज़मीन पर प्रहार करने ही वाला था, कि दार्योन्का ने देखा—चांदी का खुर चमचमा रहा है और वह है भी पंचसींगा। दार्योन्का को समझ में नहीं आया कि क्या करे। वह



पुचकारते हुए उसे बुलाने लगी, जैसे कोई पालतू बकरा हो:

"उर्र-आह-आह! उर्र-आह-आह!"

बकरा इस पर ज़ोर से हंसा और मुड़कर भाग गया।

दार्योन्का झोंपड़ी में आयी, मुर्योन्का को बताने लगी:

"मैंने चांदी के खुरवाले चमत्कारी बकरे को देखा है। उसके सींग भी देखे, खुर भी देखे। सिर्फ़ यह न देख सकी कि वह पैर से चोट करके रत्न कैसे पैदा करता है? शायद दूसरी बार देख लूंगी।"

मुर्योन्का तो बस एक ही राग अलाप रही थी:

"म्याऊं... म्याऊं... ठीक है, ठीक।"

तीसरा दिन भी बीत गया। कोकोवान्या का कहीं पता न था। दार्योन्का बड़ी उदास हो गयी। आंखों में आंसू डबडबा आये। मुर्योन्का से बात करनी चाही, तो वह भी गायब थी। अब तो दार्योन्का बिल्कुल ही डर गयी, बिल्ली को ढूंढ़ने कोठरी से बाहर निकल आयी।

चांदनी रात थी, दूर-दूर तक बिल्कुल साफ़ दिख रहा था। दार्योन्का ने देखा कि बिल्ली ढलान पर बैठी है, उसके सामने बकरा खड़ा है। जब उसने पैर उठाया तो चांदी का खुर चमचमाने लगा।

मुर्योन्का सिर हिला रही थी, और बकरा भी। जैसे कि दोनों बातें कर रहे हों। इसके बाद वे ढलान पर भागने-दौड़ने लगे। बकरा दौड़ता-दौड़ता अचानक रुक जाता था और खुर पटकने लगता था। मुर्योन्का जैसे ही दौड़कर पास आती, बकरा उछलकर फिर दूर हो जाता और फिर खुर पटकने लगता। इस तरह वे देर तक ऊधम मचाते रहे, फिर ओझल हो गये। और थोड़ी देर बाद कोठरी की ओर लौट आये।



बस, बकरा उछलकर छप्पर पर चढ़ गया और खुर पटकने लगा। उसके खुर के नीचे से रत्न छिटक-छिटककर बिखरने लगे—लाल, नीले, हरे, तरह-तरह के, रंग-बिरंगे।

ठीक इसी समय कोकोवान्या लौट आया। वह तो अपनी कोठरी पहचान ही नहीं पा रहा था। वहां तो जैसे रत्नों का ढेर ही लग गया था। चमचमाती हुई, रंग-बिरंगी आभायें फूट रही थीं। झोंपड़ी की छत पर बकरा खड़ा था और चांदी का खुर पटकता जा रहा था, रत्न बरसते जा रहे थे। अचानक मुर्योन्का भी उछलकर वहां पहुंच गयी। वह चमत्कारी बकरे के बगल में खड़ी हो गयी और खूब ज़ोर से म्याऊं की आवाज़ में बोली। और देखते ही देखते दोनों गायब हो गये। न तो वहां मुर्योन्का थी, न चमत्कारी बकरा।

कोकोवान्या ने तुरन्त अपनी आधी टोपी रत्नों से भर ली, लेकिन दार्योन्का ने विनती की:

"अभी इन्हें ऐसे ही छोड़ दो, दादा जी! कल दिन में हम फिर इन्हें देखेंगे। अहहा, ये चमचमाते हुए कितने सुंदर लग रहे हैं।"

कोकोवान्या ने दार्योन्का की बात मान ली। लेकिन सुबह खूब ज़ोरों का हिमपात हुआ, जगमगाते हुए रत्न सफ़ेद बर्फ़ से ढक गये। बाद में जब बर्फ़ को कुरेदा गया, तो वहां कुछ भी नहीं मिला। लेकिन उनके लिये उतने ही रत्न काफ़ी थे, जितने कोकोवान्या ने अपनी टोपी में भर लिये थे।

जो हुआ, सो अच्छा ही हुआ। सिर्फ़ मुर्योन्का के लापता होने का अफ़सोस था। उसे फिर कभी किसी ने नहीं देखा, चांदी के खुरवाला चमत्कारी बकरा भी नहीं दिखा। एक बार उसने दया कर दी, यही बहुत था।



लेकिन उस ढलान पर , जहां बकरे ने चौकड़ियां भरी थीं , लोगों को रत्न मिलने लगे। अधिकांश हरे थे। इन्हें क्राइसोलाइट कहते हैं। शायद आपने भी कभी उन्हें देखा है?

पाठकों से

रादुगा प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन के बारे में आपके विचार जानकर अनुगृहीत होगा। हमें आशा है कि आपकी भाषा में प्रकाशित रूसी और सोवियत साहित्य से आपको हमारे देश की संस्कृति और इसके लोगों की जीवन-पद्धति को अधिक अच्छी तरह जानने-समझने में मदद मिलेगी। हमारा पता:

रादुगा प्रकाशन
१७, ज़ूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।

П. Бажов

СЕРЕБРЯНОЕ КОПЫТЦЕ

На хинди

P. Bazhov

SILVER HOOF

In Hindi

सोवियत संघ में प्रकाशित



रादुगा प्रकाशन · मास्को